Title-code: UPHIN-48963 E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com

सत्य का असर
समाचार पत्र

Wednesday 31st January 2024 jksingh.hardoi@gmail.com website: satyakaasar.com

मौसम आधारित फरवरी माह के मुख्य कृषि कार्य हेतु एडवायजरी जारी

वरिष्ठ पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में मौसम वैज्ञानिक डॉक्टर एसएन सुनील पांडे ने फरवरी माह हेतु कृषि कार्य के लिए एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि यदि गेहूं की फसल 40-45 दिन की हो जाए तो बुआई करें. तीसरी सिंचाई बुआई के 60-65 दिन बाद करें. तीसरी सिंचाई दूरी सिंचाई के 20-25 दिन बाद यानि बाली निकलने के समय करें.इस माह में तापमान बढ़ने के साथ ही गेहूं में बीमारियों का प्रकोप होने लगता है, जिनमें कंडुआ रोग प्रमुख है. इन्हें पत्तियों और तनों पर काले धब्बों के रूप में पहचाना जा सकता है. ऐसे लक्षण दिखते ही जिनेवे (डाइथेन जेड-78) या मैन्कोजेब (डाइथेन एम-45) का 800 ग्राम 250 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें.यदि आवश्यक हो तो एक या दो स्प्रे करें। थ्रस्ट रोग को रोकने के लिए, लक्षण दिखाई देते ही प्रोपिकोनाज़ोल (टिल्ट - 25 ईसी) 10 मिलीग्राम दें. दवा को एक लीटर पानी में घोल बनाकर शाम को छिड़काव करें. दूसरा छिड़काव 10 दिन बाद करें.झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए 2.5 किलोग्राम डाइथेन एम-45 या जिनेब का 10 दिन के अंतराल पर दो बार पर्णीय छिड़काव करें जब कि जौ की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें.यदि खेत में कंडुवा रोग से प्रभावित बाली दिखे तो उसे तोड़कर, काटकर जला दें.गेहूँ जैसे अन्य कीटों एवं रोगों पर नियंत्रण रखें. जबकि शरदकालीन मक्का रबी मक्का में तीसरी सिंचाई बुआई के 75-80 दिन पर तथा चौथी सिंचाई तीसरी सिंचाई के एक माह बाद करनी चाहिए.यदि मक्के में जंग और चारकोल सड़न का खतरा हो तो 400-600 ग्राम डाइथेन एम 45 को 200-250 लीटर पानी में घोलकर एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 पर्णीय छिड़काव करें.वसंत मक्के की बुआई पूरे महीने की जा सकती है.

हिंदी दैनिक

रहस्य संदेश

...क 29 लखनऊ एवं एटा से प्रकाशित, बुधवार, 31 जनवरी 2024 RNI-No. UPHIN/2007/20715 पेज: 8

मौसम आधारित फरवरी माह के मुख्य कृषि कार्य हेतु एडवायजरी जारी

रहस्य संदेश-कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में मौसम वैज्ञानिक डॉक्टर एसएन सुनील पांडे ने फरवरी माह हेतु कृषि कार्य के लिए एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि यदि गेहूं की फसल 40-45 दिन की हो जाए तो बुआई करें. तीसरी सिंचाई बुआई के 60-65 दिन बाद करें. तीसरी सिंचाई दूरी सिंचाई के 20-25 दिन बाद यानि बाली निकलने के समय करें.इस माह में तापमान बढ़ने के साथ ही गेहूं में बीमारियों का प्रकोप होने लगता है, जिनमें कंडुआ रोग प्रमुख है. इन्हें पत्तियों और तनों पर काले धब्बों के रूप में पहचाना जा सकता है. ऐसे लक्षण दिखते ही जिनेवे (डाइथेन जेड-78) या मैन्कोजेब (डाइथेन एम-45) का 800 ग्राम 250 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें.यदि आवश्यक हो तो एक या दो स्प्रे करें। थ्रस्ट रोग को रोकने के लिए, लक्षण दिखाई देते ही प्रोपिकोनाजोल (टिल्ट - 25 ईसी) 10 मिलीग्राम दें. दवा को एक लीटर पानी में घोल बनाकर शाम को छिड़काव करें. दूसरा छिड़काव 10 दिन बाद करें. झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए 2.5 किलोग्राम डाइथेन एम-45 या जिनेब का 10 दिन के अंतराल पर दो बार पर्णीय छिड़काव करें जब कि जौ की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें.यदि खेत में कंडुवा रोग से प्रभावित बाली दिखे तो उसे तोड़कर, काटकर जला दें.

गेहूँ जैसे अन्य कीटों एवं रोगों पर नियंत्रण रखें. जबकि शरदकालीन मक्का रबी मक्का में तीसरी सिंचाई बुआई के 75-80 दिन पर तथा चौथी सिंचाई तीसरी सिंचाई के एक माह बाद करनी चाहिए.यदि मक्के में जंग और चारकोल सड़न का खतरा हो तो 400-600 ग्राम डाइथेन एम 45 को 200-250 लीटर पानी में घोलकर एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 पर्णीय छिड़काव करें.वसंत मक्के की बुआई पूरे महीने की जा सकती है.

SKS NEWS
हिन्दी दैनिक
समाज का साथी
कानपुर नगर से प्रकाशित
कानपुर, बुधवार 31 जनवरी-2024 पृष्ठ -8

मौसम आधारित फरवरी माह के मुज़्य कृषि कार्य हेतु एडवायजरी जारी

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में मौसम वैज्ञानिक डॉक्टर एसएन सुनील पांडे ने फरवरी माह हेतु कृषि कार्य के लिए एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि यदि गेहूं की फसल 40-45 दिन की हो जाए तो बुआई करें. तीसरी सिंचाई बुआई के 60-65 दिन बाद करें. तीसरी सिंचाई दूरी सिंचाई के 20-25 दिन बाद यानि बाली निकलने के समय करें.इस माह में तापमान बढ़ने के साथ ही गेहूं में बीमारियों का प्रकोप होने लगता है, जिनमें कंडुआ रोग प्रमुख है. इन्हें पत्तियों और तनों पर काले धब्बों के रूप में पहचाना जा सकता है. ऐसे लक्षण दिखते ही जिनेवे (डाइथेन जेड-78) या मैन्कोजेब (डाइथेन एम-45) का 800 ग्राम 250 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें.यदि आवश्यक हो तो एक या दो स्प्रे करें। थ्रस्ट रोग को रोकने के लिए, लक्षण दिखाई देते ही प्रोपिकोनाज़ोल (टिल्ट - 25 ईसी) 10 मिलीग्राम दें. दवा को एक लीटर पानी में घोल बनाकर शाम को छिड़काव करें।

राष्ट्रीय
सहारा

कानपुर • बुधवार • 31 जनवरी • 2024

रवरी माह में कृषि कार्य के लिये वैज्ञानिकों ने दी सलाह

ुर (एसएनबी)। वर आजाद कृषि एवं ोकी विश्वविद्यालय र के कुलपति के पर मौसम वैज्ञानिक एन पांडे सुनील ने ो माह हेतु कृषि कार्य ाए एडवाइजरी जारी

न्होंने वताया कि हूं की फसल 40-न की हो जाए तो करें। दूसरी सिंचाई के 60-65 दिन वाद करें। तीसरी दूसरी सिंचाई के 20-25 दिन वाद ाली निकलने के समय करें। इस माह मान वढ़ने के साथ ही गेहूं में वीमारियों कोप होने लगता है, जिनमें कंडुआ रोग है। इन्हें पत्तियों और तनों पर काले के रूप में पहचाना जा सकता है। ऐसे दिखते ही जिनेवे (डाइथेन जेड-78) कोजेव (डाइथेन एम-45) का 800 250 लीटर पानी में घोल वनाकर ाव करें। यदि आवश्यक हो तो एक या करें। थ्रस्ट रोग को रोकने के लिए दिखाई देते ही प्रोपिकोनाजोल (टिल्ट

■ फसल में रोग लगने के लक्षण भी बताये

-25 ईसी) 10 मिलीग्राम दें। दवा को एक लीटर पानी में घोल वनाकर शाम को छिड़काव करें। दूसरा छिड़काव 10 दिन वाद करें।

झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए 2.5 किलोग्राम डाइथेन एम-45 या जिनेव का 10 दिन के अंतराल पर दो वार पर्णीय छिड़काव करें। जौ की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें। यदि खेत में कंडुवा रोग से प्रभावित वाली दिखे तो उसे तोड़कर, काटकर जला दें। गेहूं जैसे अन्य कीटों एवं रोगों पर नियंत्रण रखें। शरदकालीन मक्का रवी मक्का में तीसरी सिंचाई वुआई के 75-80 दिन पर तथा चौथी सिंचाई तीसरी सिंचाई के एक माह वाद करनी चाहिए। यदि मक्के में जंग और चारकोल सड़न का खतरा हो तो 400-600 ग्राम डाइथेन एम 45 को 200-250 लीटर पानी में घोलकर एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 पर्णीय छिड़काव करें। वसंत मक्के की वुआई पूरे महीने की जा सकती है।

वर्ष-17 अंक-97 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, बुधवार 31 जनवरी 2024

कानपुर से प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात, औरैया में प्रसारित

दैनिक
नगर छाया
आप की आवाज़.....

RNI No.- UPHIN/2007/27090

मौसम आधारित फरवरी माह के मुख्य कृषि कार्य हेतु एडवायजरी जारी

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में मौसम वैज्ञानिक डॉक्टर एसएन सुनील पांडे ने फरवरी माह हेतु कृषि कार्य के लिए एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि यदि गेहूं की फसल 40-45 दिन की हो जाए तो बुआई करें. तीसरी सिंचाई बुआई के 60-65 दिन बाद करें. तीसरी सिंचाई दूरी सिंचाई के 20-25 दिन बाद यानि बाली निकलने के समय करें.इस माह में तापमान बढ़ने के साथ ही गेहूं में बीमारियों का प्रकोप होने लगता है, जिनमें कंडुआ रोग प्रमुख है. इन्हें पत्तियों और तनों पर काले धब्बों के रूप में पहचाना जा सकता है. ऐसे लक्षण दिखते ही जिनेवे (डाइथेन जेड-78) या मैन्कोजेब (डाइथेन एम-45) का 800 ग्राम 250 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें.यदि आवश्यक हो तो एक या दो स्प्रे करें। थ्रस्ट रोग को रोकने के लिए, लक्षण दिखाई देते ही प्रोपिकोनाज़ोल (टिल्ट - 25 ईसी) 10 मिलीग्राम दें. दवा को एक लीटर पानी में घोल बनाकर शाम को छिड़काव करें. दूसरा छिड़काव 10 दिन बाद करें.

झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए 2.5 किलोग्राम डाइथेन एम-45 या जिनेब का 10 दिन के अंतराल पर दो बार पर्णीय छिड़काव करें जब कि जौ की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें.यदि खेत में कंडुवा रोग से प्रभावित बाली दिखे तो उसे तोड़कर, काटकर जला दें.

गेहूँ जैसे अन्य कीटों एवं रोगों पर नियंत्रण रखें. जबकि शरदकालीन मक्का रबी मक्का में तीसरी सिंचाई बुआई के 75-80 दिन पर तथा चौथी सिंचाई तीसरी सिंचाई के एक माह बाद करनी चाहिए.यदि मक्के में जंग और चारकोल सड़न का खतरा हो तो 400-600 ग्राम डाइथेन एम 45 को 200-250 लीटर पानी में घोलकर एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 पर्णीय छिड़काव करें.वसंत मक्के की बुआई पूरे महीने की जा सकती है.

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 209 कानपुर, बुधवार 31 जनवरी 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

मौसम आधारित फरवरी माह के मुख्य कृषि कार्य हेतु एडवायजरी जारी

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में मौसम वैज्ञानिक डॉक्टर एसएन सुनील पांडे ने फरवरी माह हेतु कृषि कार्य के लिए एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि यदि गेहूं की फसल 40-45 दिन की हो जाए तो बुआई करें. तीसरी सिंचाई बुआई के 60-65 दिन बाद करें. तीसरी सिंचाई दूरी सिंचाई के 20-25 दिन बाद यानि बाली निकलने के समय करें.इस माह में तापमान बढ़ने के साथ ही गेहूं में बीमारियों का प्रकोप होने लगता है, जिनमें कंडुआ रोग प्रमुख है. इन्हें पत्तियों और तनों पर काले धब्बों के रूप में पहचाना जा सकता है. ऐसे लक्षण दिखते ही जिनेवे (डाइथेन जेड-78) या मैन्कोजेब (डाइथेन एम-45) का 800 ग्राम 250 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें.यदि आवश्यक हो तो एक या दो स्प्रे करें। थ्रस्ट रोग को रोकने के लिए, लक्षण दिखाई देते ही प्रोपिकोनाज़ोल (टिल्ट - 25 ईसी) 10 मिलीग्राम दें. दवा को एक लीटर पानी में घोल बनाकर शाम को छिड़काव करें. दूसरा छिड़काव 10 दिन बाद करें.झुलसा रोग के

नियंत्रण के लिए 2.5 किलोग्राम डाइथेन एम-45 या जिनेब का 10 दिन के अंतराल पर दो बार पर्णीय छिड़काव करें जब कि जौ की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें.यदि खेत में कंडुवा रोग से प्रभावित बाली दिखे तो उसे तोड़कर, काटकर जला दें.गेहूँ जैसे अन्य कीटों एवं रोगों पर नियंत्रण रखें. जबकि शरदकालीन मक्का रबी मक्का में तीसरी सिंचाई बुआई के 75-80 दिन पर तथा चौथी सिंचाई तीसरी सिंचाई के एक माह बाद करनी चाहिए.यदि मक्के में जंग और चारकोल सड़न का खतरा हो तो 400-600 ग्राम डाइथेन एम 45 को 200-250 लीटर पानी में घोलकर एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 पर्णीय छिड़काव करें.वसंत मक्के की बुआई पूरे महीने की जा सकती है।

Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

हम एक बड़ी ताकत, मुश्किलों में हमें दूसरों... 12

बाघ हमले में मजदूर की मौत, गन्ने के खेत में बरामद... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्षः 15 | अंकः 109
मूल्यः ₹3.00/-
पेज : 12
बुधवार | 31 जनवरी , 2024

तापमान बढ़ने के साथ गेहूं में बीमारियों का बढ़ता है प्रकोप

जन एक्सप्रेस | कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के क्रम में मौसम वैज्ञानिक डॉ.एस.एन. सुनील पांडे ने मंगलवार को फरवरी माह के लिए कृषि कार्य के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि गेहूं की फसल 40 से 45 दिन की हो जाने पर बुआई व तीसरी सिंचाई बुआई के 60 से 65 दिन बाद करनी चाहिए । उन्होंने बताया कि इस माह में तापमान बढ़ने के साथ गेहूं में बीमारियों का प्रकोप होने लगता है जिसमें कंडुआ रोग प्रमुख है जिसे पत्तियों और तनों पर काले धब्बों के रूप में पहचाना जा सकता है. ऐसे लक्षण दिखते ही जिनेवे

(डाइथेन जेड-78) या मैन्कोजेब (डाइथेन एम-45) का 800 ग्राम 250 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे। थ्रस्ट रोग के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि थ्रस्ट रोग के लक्षण दिखने पर प्रोपिकोनाज़ोल (टिल्ट-25 ईसी) 10 मिलीग्राम दवा को एक लीटर पानी में घोल बनाकर शाम को छिड़काव करें व दूसरा छिड़काव 10 दिन बाद करें। उन्होंने बताया कि झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए 2.5 किलोग्राम डाइथेन एम-45 या जिनेब का 10 दिन के अंतराल पर दो बार पर्णीय छिड़काव करें जबकि जौ की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें। वही खेत में कंडुवा रोग से प्रभावित बाली दिखने पर उसे तोड़कर, काटकर जला दें।

गेहूँ जैसे अन्य कीटों एवं रोगों पर नियंत्रण रखें. जबकि शरदकालीन मक्का रबी मक्का में तीसरी सिंचाई बुआई के 75-80 दिन पर तथा चौथी सिंचाई तीसरी सिंचाई के एक माह बाद करनी चाहिए.यदि मक्के में जंग और चारकोल सड़न का खतरा हो तो 400 से 600 ग्राम डाइथेन एम 45 को 200 से 250लीटर पानी में घोलकर एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 पर्णीय छिड़काव करें।